हिम्मत की एक मिसाल

बंबई के पास एक गांव में कमला का जन्म हुआ आज से 40 साल पहले। पिता बचपन में ही चल बसे। मां ने बहुत छोटी उम्र में उसकी शादी त्रापज गांव में कर दी। उसके 3 बहनें और 4 भाई थे जो बंबई में रहते थे। ससुराल में पति और सास के सिवा कोई नहीं था।

ब्याह के दो साल बाद कमला ने एक बेटी को जन्म दिया। तीसरे साल वह फिर से गर्भवती हुई और उसके पति का देहांत हो गया। सास ने उसे अपसगुनी कहकर घर से निकाल दिया। उसका मायके से लाया सामान भी सब रख लिया।

अकेली, सुंदर गर्भवती स्त्री, उम्र 16-17 वर्ष, कहां जाए। वह मायके वापस गई। मां ने सहारा दिया। लेकिन कितने दिन। कमाना ज़रूरी था। कमला ने भाई से भी मदद की भीख नहीं मांगी।

उसने मन में ठान ली। वह कुछ रोजगार करेगी। बच्चों को पढ़ाएगी लिखाएगी। उसने भैंस खरीदी, गांव में दूध बेचने लगी, मलाई से घी बनाकर बंबई बेचने को भेजती। उसका धंधा चल निकला। और भैंसें खरीदीं। कुछ साल बाद जब बच्चे कुछ बड़े हुए उन्होंने प्राइमरी स्कूल की कक्षाएं पास कर लीं। आगे पढ़ाई के लिए शहर जाना ज़रूरी था। तब भी वह नहीं घबराई।

हिम्मत करके बंबई आई। वहां खास समस्या रहने की जगह की थी। उसके भाई ने उसके रहने का इंतजाम कर दिया। यहां भैंसें पालकर घी का व्यापार नहीं हो सकता था। उसने घर पर साबुन बनाना शुरू किया। घर-घर जाकर उसे बेचती। धीरे-धीरे उसका यह धंधा भी चल निकला।

हिम्मत, लगन, सूझ-बूझ से क्या नहीं किया जा सकता। लड़की को उसने बी.काम. तक शिक्षा दी, फिर उसका ब्याह कर दिया। लड़के को इंजीनियरिंग की शिक्षा दी।

यह एक सच्ची घटना है। उस समय स्त्रियों को घर की चारदीवारी के भीतर ही रहना होता था। घर के बाहर निकलते ही लोग उसे बदनाम करते थे। तरह-तरह से उसे कमज़ोर बनाया जाता था। कमला ने सबला बन कर हालात का सामना किया।

कमला की कहानी हमें सोचने को मजबूर करती है। क्यों लड़कियां और स्त्रियां अन्याय सहन करती हैं? वे हिम्मत से सबला बन कर क्यों नहीं खड़ी होती हैं?

—मृदुला जोशी, चंद्रपुर (महाराष्ट्र)